(1)

प्रश्न :- च्यांग-काई-शेक की जीवनी और उपलब्धियों की समीक्षा करे (आंतरिक सुधार एवं विदेश नीति)

उत्तर :- डॉ० सन्यात सेन की मृत्यु ने अचानक देश में राजनीतिक शून्यता उत्पन्न कर दी। उनकी मृत्यु के साथ ही विभिन्न विचार धाराओं के बीच तनाव की स्थिति उत्पन्न हो गई। चीन की प्रमुख राजनीतिक संस्था कुओमिनतांग दल को भी विभाजन के लक्षण प्रकट होने लगी। इतना ही नहीं राष्ट्रीय एकीकरण का कार्य अधूरा रह जाने के कारण चीन के अस्तित्व पर ही खतरा उत्पन्न हो गया था।

ऐसी स्थिति में चीन के शासन की बागडोर जिस व्यक्ति ने संभाली वह था डॉ० सेन का प्रिय शिष्य (च्यांग-काई-शेक)। चेकियांग प्रांत के चीको नामक ग्राम में 1887 में एक मध्यम वर्गीय परिवार में च्यांग काई शेक ने जन्म लिया। प्रारंभिक शिक्षा पाने के उपरान्त 1906 से उसने सैनिक शिक्षा प्रारंभ की। पाओतिंग के सैनिक विद्यालय से शिक्षा ग्रहण के बाद वह जापान में उच्चतर शिक्षा के लिए भेजा गया। उसके जीवन में एक मोड़ आया। जब 1909 में डॉ० सेन से जापान में एक कैदी के रूप में मिला। तदन्तर वह डॉ० सेन का अन्ध भक्त हो गया। 1911 की चीनी क्रांति में उसने भाग लिया और डॉ० सेन की मदद की। इसके पश्चात उसकी भक्ति बीच में कुछ अवधि को छोड़ कर कुओमिनतांग दल के प्रति बनी रही। क्रांति अवधि से लेकर डॉ० सेन की मृत्यु तक उसने अपने सैनिक प्रतिभा का प्रयोग कुओमिनतांग सेना को प्रशिक्षित करने के लिए किया।

डॉ० सेन की मृत्यु के बाद संकट की परिस्थिति में उसने चीन की बागडोर संभाली और धैर्य पूर्वक समस्याओं का सामना किया। उसने अपनी जीवनी में लिखा भी है कि :— "Patient and activity are the two essential factor for a revolutionary party and the one complements the other"।

(च्यांग-काई-शेक के सामने सबसे प्रमुख समस्या थी चीन का एकीकरण। डा० सेन इस कार्य को अधूरा छोड़कर ही अन्तर्ध्यान हो गये थे। च्यांग-काई-शेक को चीन के एकीकरण के साथ-साथ पार्टी विरोध को भी समाप्त करना था। इसके लिए उसे भाग पंथियो से जूझना पड़ा। 1927 में कुओमिन्तांग दल से साम्यवादियो को निकाल दिया गया। शेष व्यक्ति च्यांग के भक्त बने रहे। पार्टी संगठन के साथ-साथ उसने चीन के एकीकरण का कार्य भी जारी रखा। 1926 में फुचांग और नानकिंग आदि प्रदेशो को विजित किया। नानकिंग में ही उसने अपने सरकार की राजधानी बनाई। पार्टी और ~~सरकार~~ सरकार को संगठित किया। पुनः अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए संचेष्ट हो गया। लम्बे परिश्रम के बाद जून 1928 को पीकिंग विजय के साथ ही चीन की एकता का कार्य सम्पन्न हो गया। इस तरह उसने डा० सेन के अधूरे कार्य सम्पन्न हो गया। इस तरह उसने डा० सेन के अधूरे कार्य को पूरा किया।)

यद्यपि उसने चीन के अधिकांश भागो को जीत लिया, साम्यवादियो की शक्ति को नष्ट कर दिया परन्तु कलांतर में उसे साम्यवादियो से जूझना पड़ा। इसी कारण 1949 मे उसे सत्ता से हाथ धोना पड़ा। 1927 से 37 तक के 10 वर्षों की अवधि मे उसे साम्यवादियो ने काफी परेशान किया। कुछ भागो पर साम्य वादियो ने अधिकार भी रखा। जिसे चीन मे शेक असमर्थ रहा। 1937 मे जापानी आक्रमण का सामना करने के लिए दोनो मे समझौता भी हुआ परंतु यह क्षणिक था और युद्ध पुनः आरंभ हो गया तथा 1949 मे शेक को साम्य वादियो ने पराजित किया।

आंतरिक सुधार :-> युद्ध के साथ-साथ शेक ने आंतरिक सुधारो के लिए भी प्रयत्न किया ताकि आम जनता की सहानुभूति प्राप्त हो सके। जैसा कि एच. एम. विनायक ने लिखा है कि - "Programme of panking was one of social reform and not one of revolution."

आर्थिक सुधार :→ चीन की आर्थिक दशा में सुधार के लिए शेक ने टी.वी. सुंग नामक अर्थशास्त्री की सहायता ली। राष्ट्रीय पुनर्निर्माण आयोग राष्ट्रीय अर्थ कौंसिल की स्थापना की। आय के स्रोतों को विदेशी प्रभाव से मुक्त किया। रेशम और कपास के उत्पादन में वृद्धि के लिए प्रयत्न किया गया। संघाई हांको कैण्टन आदि को आधुनिक नगर में परिणत कर दिया गया।

(यद्यपि उसके सुधार से चीन का आर्थिक पुनरुद्धार हुआ। परन्तु खाद्यान्न के उत्पादन पर आवश्यक जोर न दिया जाना उसकी कमजोरी बन गयी। और यह उसके पतन का भी कारण बना। फिर 1943 में चीन भयंकर अकाल से पीड़ित था लेकिन शेक ने लोगों की रक्षा के लिए कोई उपाय न किया। इसकी सहानुभूति साम्यवादी ले गये)

यातायात में सुधार :→ चीन में रेलवे लाइनों तथा सड़कों का निर्माण किया जाने लगा। पृथक रेल विभाग स्थापित किया गया वायुमार्ग का भी विकास किया गया। जहाजों का निर्माण डाक तार विभाग की स्थिति में सुधार किया गया। इस तरह यातायात के क्षेत्र में क्रांति लाने का प्रयत्न किया गया।

सैन्य व्यवस्था की आधुनिकी कारण :→ च्यांग-काई-शेक ने इस बात को अच्छी तरह समझा था कि बिना सैन्य सुधार के वह न तो साम्यवादियों का मुकाबला कर सकता है न ही आतरिक सुधारों तथा एकीकरण को कार्यान्वित कर सकता है अत: सैन्य सुधार के लिए भी उसने प्रयत्न किया। साम्यवादियों से घृणा के कारण रूस से संबंध विच्छेद हो ही चुका था। अत: जर्मनी से सैनिक परामर्श दाता बुलाया। 1928 में शेक ने जर्मन मैक्स बावर को अपना सलाहकार बनाया। इसी तरह जर्मन जनरल सीक्ट की भी सहायता ली गई। इन व्यक्तियों

के परामर्श से सेना तथा अस्त्र-शस्त्रों का आधुनिकरण किया गया।

न्यायिक सुधार :→ शेक ने चीन के पीछड़े और परम्परागत पाश्चात्य राष्ट्रों के आधार पर किया गया। फ्रांस और जर्मनी से कानून निर्माण से सहायता ली गई। कानून सबके लिए एक समान निर्धारित किया गया।

अन्य सुधार :→ मुद्रा व्यवस्था में सुधार किया गया। नोट छापने के लिए चार बैंकों को अधिकार दिया गया। (i) central Bank of china (ii) दी बैंक ऑफ चाइना (iii) The Bank of Communication (iv) Farmer's Bank of china) इसी तरह शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के लिए आधुनिक शिक्षा संस्थाओं की स्थापना की गई। (च्यांग के इन सुधारों से देश की स्थिति में सुधार तो हुआ परन्तु क्रांतिकारी परिवर्तन नहीं हुआ। च्यांग की एक प्रमुख कमजोरी यह था कि वह तानाशाही प्रवृति का था। इस कारण पार्टी और देश में लोकतांत्रीकरण की प्रवृति लुप्त हो गयी। फलत: गलती को उजागर करने वाला कोई न रहा। जनता से उसका सम्पर्क टूट गया। इस कारण जनता में असंतोष उभरने लगा और इसका फायदा साम्यवादियों ने उठाया तथा अन्तत: शेक को पदच्युत किया।)

वैदेशिक संबंध :→ च्यांग-काई-शेक की एक अन्य समस्या थी विदेशों में चीन की प्रतिष्ठा को ऊँचा उठाना। आंतरिक समस्याओं के कारण वह एवं वाह्यशिक स्थिति की ओर ध्यान नहीं दे पाया था। च्यांग शेक ने विदेशी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए असमान संधियों को समाप्त करने का प्रयत्न किया। जनता का भी समर्थन मिल ही रहा था। इस असमानता को खत्म करने के लिए प्रथमत: 1924 में चीन और आस्ट्रिया के बीच संधि हुई थी। इसी तरह की संधि अक्टूबर 1926 में फिनलैण्ड

Scanned with CamScanner

के साथ। जनवरी 1929 में बेल्जियम के साथ भी समान व्यापारिक सन्धि हुई। लेकिन चीन के कानून के लिए चुनौती के समान था। ब्रिटेन फ्रांस, अमेरिका आदि राष्ट्रों के साथ हुई वह सन्धि जिसके अनुसार इन देशों के नागरिक चीनी कानून के परी पारिधि के बाहर रखे गये थे। च्यांग ने इन राष्ट्रों से असमान सन्धि को खत्म करने की मांग की। लम्बे परिश्रम के बाद च्यांग को सफलता मिली। जब 1930 के बाद 10 राष्ट्रों ने अपने क्षेत्राधिकार समाप्त कर दिया। कुछ बक्रम में ही लेकिन ब्रिटेन अमेरिका तथा जापान ने भी अपने अधिकार समाप्त कर दिया। इसी के साथ-साथ अपने उन प्रदेशों पर भी अधिकार कर लिया जो इन राष्ट्रों के अधीन थे। जैसे - ब्रिटेन का हॉंकांग, क्याउ-च्याउ चीन को लौटा तथा अमोन का प्रदेश छोड़ना पड़ा। बेल्जियम को तीनतसिंग छोड़ना पड़ा।

मूल्यांकन :→ च्यांग शेक एक शासक के बजाए एक बेहतर सैनिक था। इसका परिचय भी उसने विभिन्न जगहों पर दिया। यद्यपि उसने चीन की उन्नति के लिए भी पर्याप्त सुधार किये। परन्तु उसकी वे सारी उपलब्धि अनवरत युद्ध के कारण नष्ट हो गयी। विदेशी मोर्चा पर भी उसकी उपलब्धि ज्यादा चमत्कार ही चीन को विदेशियों से मुक्त कराकर दामन पर लगे दाग को छुड़ाया। चीन को दुनिया के अन्य स्वतंत्र राष्ट्रों के समकक्ष बैठाया। परन्तु उसकी ये सारी उपलब्धि साम्यवादियों से पराजय के साथ समाप्त हो गई। और वह इतिहास का विषय बन गया। उसका एक अन्य दुर्गुण जिस कारण उसे बदनामी मिली वह भी उसका तानाशाही गुण।